सरसीष्वरविन्दानां वीचिविक्षोभशीतलम् ।

आमोदमुपजिघ्रन्तौ स्वनि:श्वासानुकारिणाम् ।।43।।

अन्वय सरसीषु वीचिविक्षोभशीतलम् स्वनि:श्वासानुकारिणाम् अरविन्दानाम् आमोदम् उपजिघ्रन्तौ (जग्मतु:)।

अनुवाद (मार्ग में आने वाले) तालाबों में लहरों के टकराने के कारण शीतल अपने श्वासवायु की सुगन्ध का अनुकरण करने वाली कमलों की सुगन्ध को सूंघते हुए दोनों जा रहे थे।

टिप्पणियां

उपजिघ्रन्तौ उप उपसर्ग घ्रा धातु शतृ, प्रथमा विभक्ति (वे दोनों) सूँघते हुए।

आमोद: सुगन्ध। आमोदन्ते जना: अनेनेति, आ मुद् घञ्।

वीचिविक्षोभ: वीचीनां विक्षोभ: (षष्ठी तत्पुरुष) वीचिविक्षोभ:, तै: शीतलम् (तृतीया तत्पुरुष) इति वीचिविक्षोभ-शीतलम्-छोटी-छोटी लहरों से टकराने के कारण शीतल। (वह सुगन्ध) जो लहरों के स्पर्श से शीतल थी।

स्वनिश्वासानुकारिणम् स्वस्य निश्वास: (षष्ठी तत्पुरुष) तम् अनुकर्तुम् शीलम् अस्य इति स्वनिश्वासानुकारी तम् (उपपद तत्पुरुष), (सरोवरों के कमलों की वह सुगन्ध) जो उनके श्वास के समान थी। अपने श्वास जैसी अर्थात् उनकी श्वास भी सुगन्धित थी।

विशेष संस्कृत साहित्य में उत्तम पुरुषों की श्वासवायु (साँस) कमल की गन्ध के समान सुगन्धित मानी जाती है। राजाओं, रानियों तथा महापुरुषों का वर्णन करते हुए कवि

उनकी श्वास वायु की गन्ध की तुलना कमल आदि सुगन्धित पुष्पों की गन्ध से करते हैं। राजा और रानी कमलों की गन्ध को सूँघ रहे थे जो उनके श्वास वायु की गन्ध जैसी थी।